ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 439-442
www.allresearchjournal.com
Received: 10-11-2022
Accepted: 16-12-2022

रौशन कुमार झा
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० डी० के० शर्मा
प्राचार्य, एम.बी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन अनारकोठी, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रौशन कुमार झा
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

बी.एड. कक्षा के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन

रौशन कुमार झा, डॉ० डी० के० शर्मा

सारांश
सीखने-सिखाने की विधियों का विद्यार्थियों की विभिन्न क्षमताओं पर प्रभाव पड़ता है। उचित अध्यापन विधियों द्वारा आवष्यक क्षमताओं का विकास होता है, विद्यार्थियों की समझ विकसित होती है, तथा उपलब्धि स्तर में वृद्धि होती है। प्रशिक्षण की गुणवत्ता का एक बड़ा मानक है शिक्षण के लिए उसकी प्रासंगिता। बी.एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा व्यवहार, नवाचारी पद्धतियों का प्रयोग करना, तात्कालिक सकारात्मक निर्णय क्षमता तथा समस्या समाधान योग्यता का विकास कर अध्ययन अभिक्षमता का विकास किया जाना है। प्रस्तुत शोध में बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन किया गया है तथा दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

कूटशब्द : शैक्षिक अभिवृत्ति, शैक्षिक अभियोग्यता, प्रभावशाली कक्षा व्यवहार, तात्कालिक सकारात्मक

प्रस्तावना
शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास एवं उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है, उस समय वह अपनी मलू प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उसकी इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके परिपक्वता प्रदान करती है। शिक्षा बालकों में रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा वह केवल अपने वातावरण को अनुकूलन करने में ही समर्थ नही होता, वरन् वातावरण एवं प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है। शिक्षा ही मानव को असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है। वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को अपनी परिस्थिति तथा वातावरण के मध्य अनुकूलन करना सिखाती है। शिक्षा द्वारा मानव को ज्ञानवान, कला-कौशल युक्त और सभ्य बनाया जाता है। यह माता के समान पालन-पोषण करती है और पिता के समान उचित मार्गदर्शन प्रदान करती है।

शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है। अर्थात् जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति फूल की भांति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों को सामंजस्य पूर्ण स्वाभाविक विकास में सहयोग प्रदान करती है। उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। उसे अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। शिक्षा एक गतिषील प्रक्रिया है उसकी गतिषीलता की निरन्तरता को बनाये रखने में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। शिक्षक ही समस्त शिक्षण प्रक्रिया की धुरी है। विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें, पाठ्य सामग्री , निर्देषन आदि सभी शैक्षिक कार्यक्रम में शिक्षक का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समाज एवं राष्ट्र की उन्नति शिक्षकों पर निर्भर करती है।

शिक्षक, शिक्षण की प्रक्रिया तभी सफल बना सकता है जब वह शैक्षिक, व्यावसायिक योग्यताओं के साथ वैयक्तिव गुणों से युक्त हो। शिक्षा में प्रभावी और सार्थक सुधार लाने के लिए शिक्षक को शिक्षण कला के समस्त कौषलों से परिपूर्ण करना होगा। वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में बालक बौद्धिक ज्ञान को प्राप्त करता है किन्तु वह उसे व्यक्त करने एवं व्यवहार में प्रयोग करने में सफल नहीं हो पाता। शिक्षक के पास आवष्यक योग्यताएँ हैं परंतु वह तब तक अप्रभावी हैं जब तक कि उसका स्थायी प्रभाव छात्रों में नहीं देखा जाता।

शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य स्त्रोत विद्यालय है, जहाँ विद्यार्थी समायोजन करने की प्रक्रिया को सीखता है। कहा जा सकता है कि अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है, और वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूलन एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती है और वह अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजित करने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों से अपने को समायोजित कर लेता है, वह प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है वह असन्तोष, कुण्ठा, द्वन्द्व एवं तनाव का शिकार हो जाता है एवं अपने लक्ष्य से भटक जाता है, जिससे विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को जीवन के कठोर यर्थाथपरक और जटिल समस्याओं का सामना करना सिखाना चाहिए ताकि विद्यार्थीगण जीवन के स्पंदन को महसूस कर सकें और तमाम तरह के प्रश्नों को समझने और परखने योग्य बन सके। भगवान ने मनुष्य को समायोजन की अद्भुत क्षमता प्रदान की है। जिसके द्वारा मनुष्य अपने को जानता और समझता है, इससे वह समाज में अपनी जगह बनाकर रहता है और यहीं मनुष्य की अंदरूनी क्षमता की विशेषता है कि वह लोगों के साथ भाईचारा और प्रतिस्पर्धा के सम्बन्धों के साथ रहता है। ‘‘समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी जरूरतों और परिस्थितियों के मध्य सन्तुलन कायम करता है।’’ वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों को स्वतत्रं रूप से कार्य करने मे बाधा पहुंचाता है। समायोजन जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वातावरण से सन्तुलित सम्बन्ध बनाए रखने के लिए व्यवहारों मे परिर्वतन करता है। अतः शिक्षण को अधिकाधिक प्रभाव पूर्ण बनाने के लिए शिक्षक की प्रभावशीलता छात्रों के सीखने की प्रवृत्ति, ध्यान, रूचि, छात्र प्रत्युत्तर पर निर्भर करती है।

अध्ययन की आवश्यकता

सामान्यतः यह कहा जाता है कि व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण ही शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिव़त्तियों में भी भिन्नता पायी जाती है। इसी दृष्टि से इस अन्तर को ज्ञात करना भी सही कहा गया है जिसमें कौशलों को विकसित करने की बात की गयी है ताकि शिक्षा प्रणाली एवं ज्ञान के ढॉचें में योजनाबद्ध परिवर्तन लाया जा सके। यह देखने का प्रयास किया है कि क्या जहाँ एक तरफ महिलाओं को गृहणी का दर्जा दिये जाने के कारण बाह्य समाज में छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिव़त्तियों में कोई अन्तर तो नहीं है। क्या ये दोनों चर एक दूसरे को प्रभावित करते है या नही? यदि प्रभावित करते है तो किस प्रकार प्रभावित करते है? अतः शोधकर्ता को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की जीविका वरीयता के सन्दर्भ में शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिव़त्तियों के अध्ययन की आवश्यकता हुई।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सरकारी/गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का अध्ययन करना।
2. सरकारी/गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3. बी.एड. पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का अध्ययन करना।
4. बी.एड. पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में संबंध ज्ञात करना।

अध्ययन क्षेत्र

समय एवं साधनों की सीमितता के कारण इस शोध की सीमाएं इस प्रकार है-

1. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल दरभंगा शहर के बी०एड० विद्यार्थियों को लिया गया है।
2. समय की अति अल्पता के कारण केवल 180 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में रखा गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का सांख्कीय विश्लेषण किया गया। दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध मात्रा ज्ञात करने के लिए कार्ल पिर्यसन के प्रोडक्ट मोमेन्ट सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के अन्तर को देखने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। जिसके परिणामों की व्याख्या इस प्रकार है-

तालिका 1: सरकारी/गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर	परिणाम
सरकारी	90	90.51	9.53	178	0.30	1.97	NS
गैरसरकारी	90	91.79	7.81				

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि सरकारी संस्था के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का मध्यमान 90.51 है और गैरसरकारी के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का मध्यमान 91.79 है तथा SD क्रमशः 9.53 तथा 7.81 है। दो समूहों के t-Value का मान 0.30 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से कम है अर्थात् सरकारी व गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: सरकारी/गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर	परिणाम
सरकारी	90	252.11	35.31	178	0.95	1.97	NS
गैरसरकारी	90	252.45	35.57				

तालिका सं०- 02 से स्पष्ट है कि सरकारी संस्था के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 252.11 है और गैरसरकारी संस्था के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 252.45 है तथा SD क्रमशः 35.31 तथा 35.87 है। दो समूहों के t Value का मान 0.95 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से कम है।

तालिका 3: पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर	परिणाम
पुरुष	120	90.62	9.08	178	.174	1.98	NS
महिला	60	90.82	7.66				

उपरोक्त तालिका के अनुसार पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अभियोग्यता का मध्यमान 90. 62 तथा SD 9.08 है तथा महिला प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता का मध्यमान 90.82 एवं SD 7.66 है। दोनों के मध्यमान हेतु t Value 174 है । जो 0.05 सार्थक स्तर के मान से कम है।

तालिका 4: पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर	परिणाम
पुरुष	120	250.15	36.51	178	.13	1.98	NS
महिला	60	262.53	27.86				

उपरोक्त तालिका के अनुसार पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 250.15 तथा SD 36.51 है तथा महिला प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 262.53 एवं SD 27.86 है। दोनों के मध्यमान हेतु t-Value .13 है । जो 0.05 सार्थक स्तर के मान से कम है।

तालिका 5: पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर

समूह	N	M	SD	df	R	परिणाम
शैक्षिक अभियोग्यता	180	89.81	8.49	178	0.04	NS
शैक्षिक अभिवृत्ति	180	252	35.51			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध 04 प्राप्त हुआ इस आधार पर उक्त परिकल्पना क्रमांक 05 अमान्य की गयी।

निष्कर्ष:

1. बी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थी दोनों समान शैक्षिक योग्यता रखते।
2. बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् अभिवृत्ति किसी संस्थान एवं परिस्थिति के प्रति मानव के व्यवहार को प्रदर्शित नहीं करती है।
3. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् छात्र नियंत्रण, कक्षा निर्देशन, शिक्षक - छात्र संबध, नवाचार के प्रयोग आदि पर आयु, लिंग, अनुभव का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। चूंकि महिला व पुरूष प्रशिक्षार्थी दोनों में ही समान रूप से शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. पुरूष एवं महिला डी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् पुरूष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों के दृष्टिकोण अपने पेशे के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं I
5. डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता तथा शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध पाया गया अर्थात् शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की जिज्ञासु प्रवृत्ति, नवीन ज्ञान को ग्रहण करना, नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति तथा व्यवसाय के प्रति जागरूकता उच्च अभियोग्यता को दर्शाती है।

संदर्भ

1. Ahluvaliya. Fifth Survey of research in Education (1988-1992). 1972;2:924.
2. Jain, Smeeta. A Study of creativity in relation to the teaching aptitude, Skills and personality variables of pupil-teachers. Vth Survey Vol-II, Page 1560, New delhi, NCERT; c1992.
3. Meera S. A study of the relation ship between teacher behaviour and teaching aptitude of teacher-trainies. Vth Survey Vol-II, Page 1352, New delhi, NCERT; c1988.
4. चौधरी, नीला 2008 "बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभियोग्यता का मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन"
5. Sharma, Meenu. A study of teachers Socio-economic status and values with references to their attitude towards the nation. Vth Survey Vol-II, Page 1492, New Delhi, NCERT; c1992.